महिला साशक्तिकरण : अवसर और चुनौतीयां

समीक्षा संजय केरगुटे के एल ई संस्था के जी आय बागेवाडी माहाविद्यालय नीप्पानी ई.मेल

:Samikshakergute@gmail.com

शोधसार:

' नारी ' यह समाज का मूल आधार है।तथा ईश्वर द्वारा समाज को दिया गया खू्बसूरत उपहार है। नारी के बिना समाज को देखा ही नहीं जा सकता। नारी के बिना समाज की सृष्टि भी नहीं हो शकती। नारी समाज के अनेक रिश्ते नीभती है, जैसे माँ, बेटी ,बहन, पत्नी आदि। परंतु आज नारी को ही सशक्त बनानी की जरूरत आ पड़ी है। यह ऐसा समय है जहाँ नारी को अपनी शक्ति का एहसास कराना है।

भारत के पुराणों में भी स्त्री शक्ति को दर्शाया गया है। माँ महाकाली, माँ दुर्गा,माँ सरास्वती, माँ लक्ष्मी के वीरता के गीत है। इतना ही नहीं हमारा देश नदियों को भी माँ केहता हैं। अपनी देश को भी माँ का दर्जा दिया गया है।जो एक स्त्री रूप है, परंतु फिर भी शास्त्र के नाम पर हमारे समाज मे ढोंग रचाया जाता है। इसीलिए समाज मे सती पद्दती, बल्य विवाह ,दहेज प्रथा आधी रूढ़िया समाज मे होती है।

यदी प्राचीन समय से पूर्व,मध्य युग तक देखें तो भारतीय समाज मे नारी को उच्च दर्जा प्राप्त था। पूर्ण सामाजिक, राज्यनै्तीक, धार्मिक,आर्थिक अधिकार प्राप्त थे ।लेकिन मुग़लों के आगमन से नारी का मान- सम्मान गिरने लगा। वे घर में कैद होती गई तथा नारी के अधिकार छीनते चले गए। फिर स्वतंत्र काल मे थोड़ी सुधारना हुई और बढ़ रही है परं्तु यह पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हो पाया हैं।

महिला साशक्तिकरण का तात्पर्य है की महिला वर्ग को साशक्त बनाना। आसान शब्दों में इसे बताया जाए तो महिलाओं मे ऐसी शक्ति को डालना की वे समाज मे अपने फैसले खुद ले सके और ऐसा जीवन बिताए जैसा वे बिताना चहती है।

किसी भी देश या समाज में महिला साशक्तिकरण होना बहुत जरूरी है। समावेशी और प्रगतिशील समाज के निर्माण के लिए महिला साशक्तिकरण बहुत जरूरी है। जब महिलाएँ सशक्त होती है, तो वे आर्थिक विकास , सामाजिक विकास, कौटूंबीक विकास की प्रतिक बनती है।

आज के युग में अगर देखे तो अधिकां्श महिलाएँ शिक्षा प्राप्त कर हर क्षेत्र मे अपना योगदान प्रधान कर रही है। बदलते समय के साथ समाज के विचार भी बदल रहे हैं। हर एक क्षेत्र में लड़कियाँ् लडकों के कन्धे से कन्धा मिला के चल रही है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचा जहाँ महिलाओं का योगदान नहीं है।कृषि, लेखन, शिक्षा, उद्योग ,कला, रक्षा आदि। पर फिर भी हमारे देश का समाज महिला साशक्त है ऐसा नहीं कहा जा सकता है।

भारत की आधी आबादी महिलाओं की है और विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार अगर महिला श्रम में योगदान दे तो भारत की विकास दर दहाई की संख्या मे होगी। फिर भी यह दुर्भाग्य की बात है की सिर्फ कुछ लोग महिला रोजगार के बारे में बात करते है अगर महिलाएँ कीसी तरह अपनी शिक्षा पुरी भी करती है तो भी उन्हें समाज में काम करने नहीं दिया जता।

भारत में यह होने का मूल करण है की हमारा देश पितृ सत्तात्मक ढांचे में रहता है। यहाँ घर की सारी आर्थिक जिम्मेदारी घर के पुरुष के हाथों में दी जाति है ।ऐसे समाज में महिला को साशक्त बनाना बहुत जरूरी है। यदी समाज को स्वस्थ दिशा में आगे बढ़ाना है तो समाज मात्र या पितृ सत्तात्मक होने के बजाय इनसे नीरपेक्ष हो तो एक बेहतर सामाजिक संरचना तैयार होगी और सही मायनो में पुरुष- स्त्री समान रूप से साशक्त होंगे।

भारत में ऐसे अनेक परंपराएँ है जिससे महिलाओ का आगे बढ़ना मुश्किल है।जैसे घुँघट प्रथा, बाल्यविवाह ,दहेज की पद्धती आदि। सबसे पहली चुनौती तो लिंग भेदभाव है जहाँ पर महिलाओं को पुरुष के मूकाबले कम अवसर मिलता है। समाज में आज भी कई जगहो पर महिलाओं को शिक्षा, नौकरी और समान अधिकारों से वंचित रखा जता है। सामाजिक परंपराएँ एक बड़ी चुनौती हो गई है।

महिलाएँ सिर्फ शिक्षा, रोजगार तथा भारत की परंपरा ही नहीं बल्कि अनेक ऐसे समस्याएँ है जिनसे वे लड रही है। जैसे हिंसा, कन्या भ्रूण हत्या, छेडछाड़,घरेलु हिंसा, एसिड अटैक, बलात्कार आदि। इसके खिलाफ कानून तो है परंतु फिर भी यह समस्या दिन ब दिन बढ़ाती जा रही है। इसीलिए भारत सरकर इन सभी बातो को गंभीरता से लेनी चाहिए। तथा इसके खिलाफ कानूनों को और भी सख्त करनी चाहिए।

आमतौर पर यह असमानता गाँव प्रदेश में देखि जाति है। जहाँ गाँव की लड़कियाँ घर से बाहर नहीं निकल पाती है। मनचाहे कपड़े नहीं पहन पाति,अपने लिए कोई भी फैसला उन्हें खुद नहीं लेने दिया जता,कम उम्र में शादी की जाति है। अभी ऐसा हर गाँव में तो नहीं होता परंतु कुछ गाँव ऐसे है जो इस बदलती दुनिया से वंचित है।

महिलाओं को पूर्ण रूप से सशक्त करने के लिए इन बातो में वह सशक्त होनी चाहिए। जैसे आर्थिक सशक्तिकरण ,सामाजिक सशक्तिकरण, स्वास्थ्य और कल्याण और स्वरक्षा। जहाँ उसे शिक्षा,नौकरी के अवसर प्राप्त होंगे। अपने जरूरतो को, साथ ही अपने परिवार के जरूरतो को वह पुरा कर सकेगी।इसीलिए कहते हैं की,' एक महिला सशक्त बनेगी तो हर कुटुंब सशक्त बनेगा और हर कुटुंब सशक्त बना तो सामाज सशक्त बनेगा'।

सामाजिक रूप से सशक्त बनी तो वह अपने फैसले खुद ले पाएगी। अपने समुदाय, कुटुंब तथा देश के लिए खुद आवाज उठा सकती है । सशक्तिकरण यह महिलाओं के स्वास्थ्य के संबंध में भी है जहाँ महिला अपने स्वास्थ्य का पुरा ख्याल रखेंगी तथा अपने शरीर और प्रजनन अधिकारों के संबंध में विकल्प चुनने की क्षमता रखेंगी।

अगर महिलाओं को इस समाज में सशक्त होना है तो उन्हें अपनी लड़ाई खुद लड़नी चाहिए ।अपनी रक्षा की जिम्मेदारी खुद लेनी चाहिए। जब महिला खुद के लिए आवाज उठाएँगी तभी समाज महिला सशक्ती की और बढ़ेगी और समाज में असली स्त्री- पुरुष का भेद मिठेगा। महिलाओं को एक दुसरे का सहारा बन चलना चाहिए।

महिलाओं को अगर साशक्त बनाने के लिए:

* बेरोजगारी और कार्यस्थल पर असमान अवसरों को खत्म करना चाहिए।
* महिलाओं को शिक्षा, नौकरी और समान अधिकारों से वंचित नहीं रखा जना चाहिए।
* महिलाओं को आत्म- सम्मान की भावना देनी चाहिए।
* धर्म के नाम पर होनेवाले अंधश्रद्धा से महिलाओं का शोषण नहीं करना चाहिए।
* महिला शोषण के विरूद्ध के कानूनों को और भी सख्त करना चाहिए।
* महिलाओं को चुनाव करने और फैसले लेने का अधिकार देना चाहिए।
* महिलाओं को घर के अंदर और बाहार अपने जीवन को नियंत्रित करने की शक्ति देनी चाहिए।

भारत एक ऐसा देश है जीसे महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता से पिछड़े देशों में गिना जता है। यूनाइटेड नेशन डेवलपमेंट प्रोग्राम (यूएनडीपी) और महिलाओं के सशक्तिकरण और लैंगिक समानता के लिए काम कर रहे संघटन यूएन वीमेन ने अपनी नई रिपोर्ट था।"द पाथ्स टू इक्वल" में भारत को महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता के मामले में पिछड़े देशों की लिस्ट में शामिल किया है।

महिला सशक्तिकरण की लड़ाई आज की नहीं बल्की कहि सालों से चलती आ रही है। जैसे सावित्रीबाई फुले जी ने समाज से लड़कर अपनी शिक्षा प्राप्त की तथा और महिलाओं को प्रेरणा दी की वे भी शिक्षा प्राप्त कर सकती हैं। उस दौर में जब लोग यह कहते थे की महिला का शिक्षा लेना यानी समाज को दूषित करना पर उन्होंने कड़ी मेहनत और मुसीबतों का सामना कर यह सिद्ध किया की किसी भी लड़की का पढ़ना समाज को दूषित नहीं बल्की उज्वाल करता है।

ऐसे अनेक हस्तियाँ है जिनकी प्रेरणा हम ले सकते हैं। जैसे की डॉक्टर आनंदी गोपाल, कल्पना चावला , किरण बेदी ,पीटी उषा, मेधा पाटकर, लता मंगेशकर आदी। इन्होंने यह साबित किया की महिला जब ठान लेती है तब वह सब कुछ कर सकती है। यही प्रेरणा हम सबको लेनी चाहिए ।

स्वतंत्र संग्राम की बात करे तो झाँसी रानी लक्ष्मी बाई की गर्जना हमारे रागो में आग डाल देती है।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार, देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के,
वार, नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,सैन्य घेरना,दुर्ग तोड़ना, यह थे उसके प्रिया खिलवार
- मैथिली शरण गुप्त

मैथिली जी की यह कविता हमारे लिए एक प्रेरणा है। हर एक महिला में एक दुर्गा बस्ती है। इस बात का एहसास हर स्त्री को होना चाहिए जब यह बात हर स्त्री समझेगी और अपने लिए खुद लड़ेगी तब वह असली दुर्गा बनेगी।

निष्कर्ष:

महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य यह नहीं की महिला को श्रेष्ठ बताएँ बल्कि यह है कि समाज ऐसे निर्माण हो जहाँ कोई भी भेद न हो।

महिला को करुणा की नहीं, अभी तो अवसर की जरूरत है। जिससे वे अपनी शक्ति को समाज में दिखा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. From - WWW.drishtiias.com
2. भारत में महिला सशक्तिकरण- Drishti IAS
3. From -WWW.educationalvip.com
4. महिला सशक्तिकरण-knowledge Hub
5. From -wikipedia https://hi.wikipedia.org
6. महिला सशक्तिकरण
7. From -Chrome- झाँसी की रानी- मैथिली शरण गुप्त